WARHAMMER ONLINE
AGE OF RECKONING

Ekam's Scan
Ocean 11

© Copyright Games Workshop Limited 2006. All Rights Reserved. Games Workshop, Warhammer, Warhammer Online, Age of Reckoning, and all associated marks, names, races, race insignia, characters, vehicles, locations, units, illustrations and images from the Warhammer world are either ®, ™ and/or © Games Workshop Ltd 2000-2006. Used under license by Mythic Entertainment, Inc. All Rights Reserved.

MYTHIC ENTERTAINMENT

www.desktopextreme.com

राज

कॉमिक्स विशेषांक

मूल्य 16.00 संख्या 87

आखिरी निशानी

भोकाल

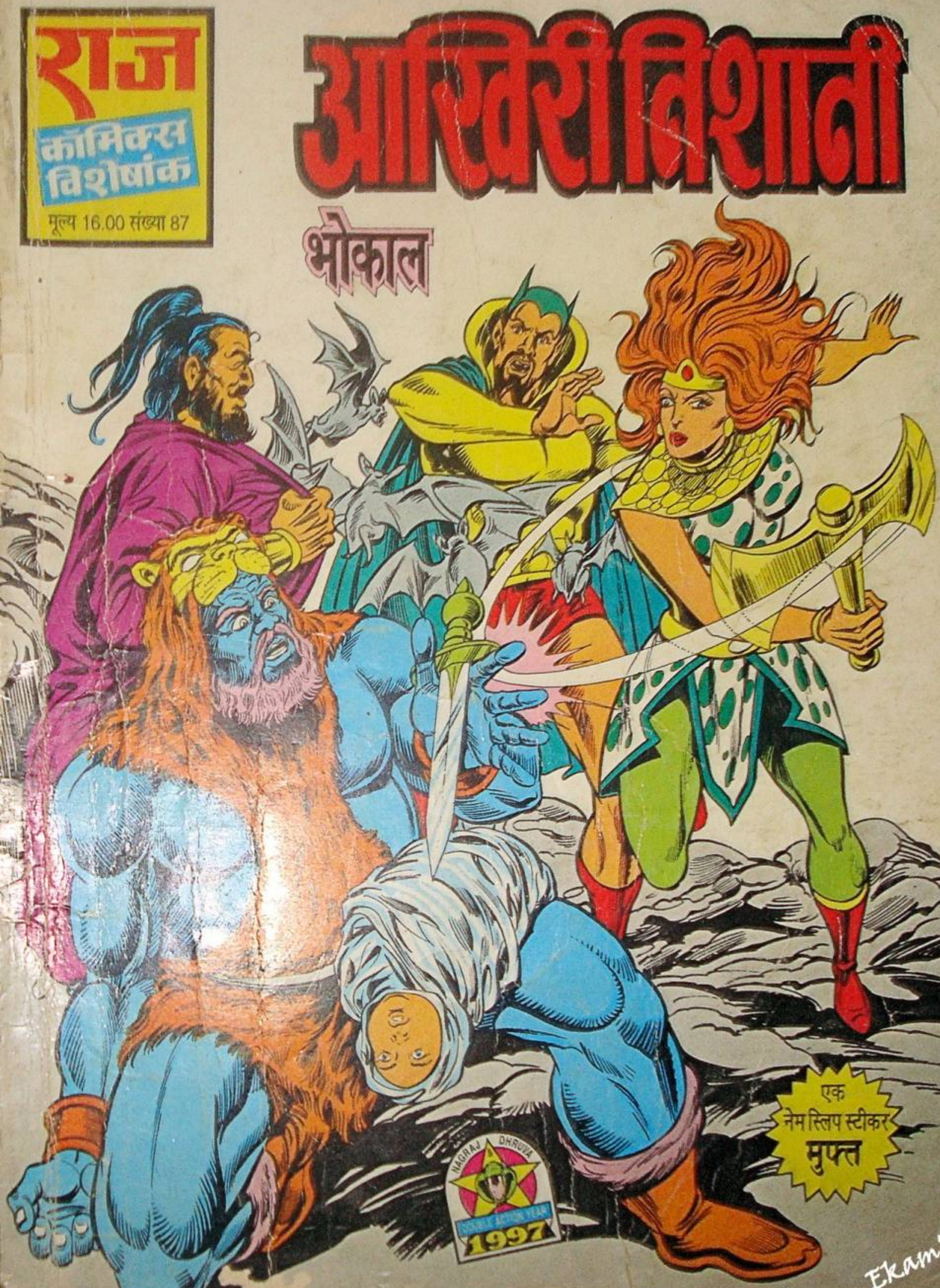

एक
नेम स्लिप स्टीकर
मुफ्त

NAGRAJ DHRUVA
COMIC ACTION YEAR
1997

Ekam's

राज कॉमिक्स में

इसी सैट के कॉमिक

- केंचुली (नागराज का विशेषांक)
- आखिरी निशानी (एक ट्रेडिंग कार्ड मुफ्त) (भोकाल का विशेषांक)
- मरेंगे डोगा के दुश्मन (एक सेफ स्टिकर मुफ्त) (डोगा)
- क्राइम कॉलेज (एक स्टीकर मुफ्त) (परमाणु)
- चुनौती (एक स्टीकर मुफ्त) (भेड़िया)
- मुर्दा देगा मौत (एजेन्ट)
- चोर बाजार (फाइटर टोड्स) (एक स्टीकर मुफ्त)

आगामी सैट के कॉमिक

- प्रलय (नागराज और ध्रुव का विशेषांक) 96 पृष्ठ मूल्यः 25.00
- दो फौलाद (डोगा और इंस्पेक्टर स्टील का विशेषांक) (एक ट्रेडिंग कार्ड मुफ्त)
- निशाना (तिरंगा)
- अपराध (इंस्पेक्टर स्टील)
- नन्हे हत्यारे (भेड़िया)
- झूम बराबर झूम (गमराज) (एक स्टीकर मुफ्त)
- मैं नहीं छोड़ूंगा (बांकेलाल) (एक स्टीकर मुफ्त)

कोई भी छप्पन रुपए मूल्य या अधिक की कॉमिक आप हमसे डाक द्वारा घर बैठे मंगाएं। साथ ही प्राप्त करें एक आकर्षक गिफ्ट। कृपया छप्पन रुपए या अधिक का मनीआर्डर **राजा पॉकेट बुक्स, 330/1, बुराड़ी, दिल्ली-84** के पते पर भेजें। और अपनी मनपसंद कॉमिकों के नाम मनीआर्डर फार्म के निचले हिस्से में अपने पूरे पते के साथ साफ-साफ लिखकर भेजें।

भोकाल सीरीज के अत्यन्त सनसनीखेज कॉमिक

- खौफनाक खेल
- तिलिस्मी ओलम्पाक
- भोकाल
- शूतान
- अतिक्रूर
- भोकाल तिलिस्म मे
- तिलिस्म टूट गया
- भोकाल और फूचांग
- अतिक्रूर और गजोख
- विकांडा
- सबसे बड़ा हत्यारा
- पीकू पकोड़िया
- तुरीन
- कपाला
- जहरघाटी
- शूतान की शादी
- जहरघाटी
- ★ भोकाल की तलवार
- तीन चुड़ैलें
- तन्त्रा
- वज्रा
- ★ कछुआ महल
- भोकाल नहीं हारेगा
- भोकाल गायब
- जल उठा रेगिस्तान
- रेत का भोकाल
- ★ शैतान बेटा
- विकटव्यूह
- मर गया शूतान
- ★ युद्ध नहीं लड़ूंगा
- ★ बुद्धिपासा
- अत्याचारी
- ★ आखिरी निशानी
- ★ खतरों की धरती

■ इस निशान के कॉमिकों का मूल्य 8/-
★ इस निशान के कॉमिकों का मूल्य 16/-

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन: प्रकाशक: राजा पॉकेट बुक्स 330/1 बुराड़ी, दिल्ली-84 फोन: 7221410

दिल्ली में वितरक : नागराज नावल्टीज 313 दरीबा कलां, दिल्ली-6 फोन: 3278397

आखिरी निशानी

मोकाल सीरीज

अनन्त और विशाल अंतरिक्ष में पृथ्वी के सबसे नजदीक इस ग्रह का नाम है ओसाक ग्रह--

पृथ्वी की तरह ही जीवन से परिपूर्ण है यह ग्रह--

जिस पर राज करती है दिवंगत महाराजा गर्बोच की पत्नी और तुरीन की मां महारानी रसिया--

में नरक की अग्नि में जल रही हूं! मां, मुझे बचाओ...

...मुझे बचाओ मां! मुझे बचाओ...

आहह! मांऽ

तुरीन!

तुरीन!

एक झटके से उठ खड़ी हुई महारानी रसिया का सारा शरीर पसीने से नहाया हुआ था।

©RAJA POCKET BOOK

ओफ्फ! इस स्वप्न का एक ही अर्थ हो सकता है कि मेरी पुरी पुरीलोक पर कोई मुसीबत आन पड़ी है!

महारानी रसिया किसी विपत्ति पर पहुंच पाती...

...उससे पहले ही आकाश मार्ग से तेजी से आता हुआ एक रथ वहां पहुंचा महर्षि गाजो बाजो...

महारानी! महारानी!!

क्या हुआ महर्षि! आप इतने घबराये हुये क्यों हैं?

कोई अनर्थ हो गया लगता है। महारानी! हमें तुरन्त ही पृथ्वी की तरफ प्रस्थान करना होगा!

पृथ्वी--

जिसके एक राज्य विकासनगर को अपनी कर्मभूमि मान चुका है परीलोक से वहां पहुंचा महाबली भोकाल--

अपनी अन्तिम सांस तक अपनी कर्मभूमि की रक्षा करने के लिए वचन-बद्ध भोकाल--

अपने वचन की रक्षा और शत्रुओं के दांत खट्टे करने के लिए ही रणभूमि में मौजूद है--

महर्षि गाजो बाजो व महारानी रसिया के बारे में जानने के लिए पढ़ें - खौफनाक खेल व तिलिस्म टूट गया

जाने किस अनुजों से लोहा लेते...

...और उनके व्यूह को तोड़ने में व्यस्त रहने वाला महाबली भोकाल...

...रात्रि को उसकी यादों में व्यस्त हो जाता है जो सदा उसके दिल में बसी रहती है और वो है--

तुरीन! मेरी प्रिय तुरीन। जब भी मैं तुम्हारी दी हुई इस मुद्रिका को देखता हूं तुम्हारा सुन्दर मुखड़ा मेरी आंखों के सामने घूम जाता है। ऐसा लगता है जैसे तुम चुपके से मेरे पास आ गई हो।

किस सोच में डूबे हो महाबली?

तुरीन की यादों में खोया भोकाल उस आवाज पर चौंका

और उसके हाथ से वह अंगूठी निकल गई--

अरे!

अंगूठी चट्टान से टकराई और उसका नग चटक गया--

इसी के साथ भोकाल ऐसे तड़पा मानों उसके दिल के हजार टुकड़े हो गये हों--

ओफ्फ! नहीं!

क्या हुआ महाबली? तुम एकाएक इतने घबरा क्यों गए?

तुरीन के साथ जरूर कोई अनहोनी हो गई है सेनापति। इस मुद्रिका के नग का चटकना उसका संकेत है। क्योंकि विवाह के पश्चात प्रथम रात्रि को यह मुद्रिका मुझे देते समय तुरीन ने मुझसे कहा था...

इस मुद्रिका में जो नग है वह मेरा दिल है। ध्यान रखना प्रिय! इसे खरोंच भी ना लगे!

चिन्ता ना करो प्रिय! तुम्हारे इस दिल को मैं अपने दिल से लगाकर रखूंगा।

इसका टूटना अवश्य ही किसी अनर्थ की निशानी है सेनापति!

अगर तुम ऐसा समझते हो तो कुछ दिन के लिए युद्ध छोड़कर तुरीन से मिल क्यों नहीं आते?

तुरन्त ही कठोर होता चला गया भोकाल का स्वर--

नहीं! मैं ऐसा नहीं कर सकता। इस समय शत्रु एकदम सिर पर खड़ा है। ऐसे समय में युद्ध से हटना अपनी कर्मभूमि से दगा करना होगा...

... और भोकाल ऐसा कदापि नहीं कर सकता क्योंकि उसके लिए हर रिश्ते से बड़ा है राष्ट्र हित!

तुरीन की यादों को अपने मन में दबा चुका था भोकाल।

लेकिन अलासक राज्य के महर्षि राकूदेव का मांत्रिक पुत्र तिल्ली ऐसा कैसे कर पाता--

तुरीन! आज तक मेरी आती-जाती प्रत्येक सांस में तुम्हारा सिर्फ तुम्हारा ही नाम बसा है। अपने प्राणों से बढ़कर प्रेम करता था मैं तुम्हें...

...मेरे उस अथाह प्रेम का फल उस समय मुझे तुम्हारे रूप में मिलने जा रहा था, जब जहरघाटी से मैं अपनी मांत्रिक शक्ति के बल पर भोकाल * और तुम्हारे लिए मद्दोक का दूध लेकर सही-सलामत वापस लौटा था...

* जानने के लिए पढ़ें- तुरीन, कपाला व जहरघाटी

उस सफलता का सारा श्रेय मुझे देते हुए महर्षि गाजो-बाजो ने घोषणा की थी-

मैं महारानी रसिया की सहमति से राजकुमारी तुरीन और तिल्ली के विवाह की घोषणा करता हूं।

मुझे एक स्वर्ग मिलने जा रहा था जिसे तुम्हारी घोषणा ने अगले ही पल नरक में बदल दिया--

मैं विवाह करूंगी तो सिर्फ भोकाल से।

वज्रपात हुआ था मुझपर तुम्हारी घोषणा सुनकर। तुम्हें दुखी नहीं देख सकता था मैं। तभी अपने दिल पर पत्थर रखकर मैंने तुम्हें जाने दिया।

क्योंकि तुम दोनों ही एक-दूसरे को प्रेम करते थे।...

... मुझे खुशी है कि अपने प्रेम का बलिदान करने का मेरा निर्णय एकदम सही था।

अश्रुभरी उस मंत्र सम्राट की आंखें...

... अचानक हैरत से भरती चल गईं।

तुरीन!

नहींऽऽऽ

नहींऽऽऽ

छनाक

तस्वीर के शीशे की तरह ही अपने अंदर बहुत कुछ टूटता महसूस किया था तिल्ली ने—

एक क्षण बाद ही अपने मंत्रबल से ओसाकग्रह से पृथ्वी की तरफ बढ़ रहा था मीटियो-

प्रेम जिसके लिए ओसाकग्रह की राजकुमारी तुरीन ने अपनी माँ रानिया, पूरा राजपाट-वैभव और ओसाकग्रह का राजपाट ठुकरा कर परीलोक के राजकुमार भोकाल का हाथ थाम लिया और पृथ्वी के सिकंदराबाद राज्य में पहुंच उसके साथ विवाह कर लिया।

भोकाल और तुरीन के विवाह में एक दुष्ट राक्षस हिमराज ने अपनी हिमशक्तियों से तुरीन को हासिल करके उसे अपनी सैकड़ों रानियों में शामिल करने का प्रयास किया परन्तु फिर भी वह उन्हें एक छोटा सा संसार बसाने से ना रोक पाया-

तुरीन के उस संसार में उसका मुंह बोला भाई शूतान और भाभियां वेणु और लड़की भी शामिल थे -

लेकिन क्या जानती थी तुरीन कि जिसके लिए उसने अपना सब कुछ छोड़ दिया वह उसके साथ विश्वास -घात करके उसे रूपसी और सलोनी जैसी सौतनों का...

...और उनसे पैदा होने वाले बच्चों का उपहार भी देगा-

नहीं! भोकाल किसी के नहीं हो सकते। वे मेरे हैं... सिर्फ मेरे!

किंकर्तव्यविमूढ़ सी हो गई थी तुरीन---

ऐसे में भोकाल का कर्तव्य बनता था कि वह अपनी अर्धांगिनी को सम्भालता / उसे दिलासा देता, लेकिन उसने कर्तव्य व प्रेम से बढ़कर समझा सीमाओं पर जाकर मार-काट करना---

अगर शूलान, वेणु व लड़ाकी ने गर्भवती तुरीन को ना सम्भाला होता तो ना जाने उसका क्या हाल होता-

शान्त स्वभाव का शूलान भोकाल के लौटने की प्रतीक्षा कर रहा था...

...लेकिन उस दिन टूट गया शूलान के संयम का बांध जब तुरीन, सलोनी और रूपसी में हुए विवाद का सारा दोष रानी मोहिनी ने तुरीन पर गढ़ दिया--

बस महारानी, बस। पक्षपात करके आपने सिध्द कर दिया कि इस राज्य में मेरी बहन तुरीन की कोई इज्जत नहीं। अब हम यहां एक पल भी नहीं रुक सकते।

फिर शूलान ने किसी की ना सुनी तुरीन और अपनी दोनों पत्नियों के साथ जंगल में आकर रहने लगा वह और प्रतीक्षा करने लगा उस दिन की, जब तुरीन मां, भोकाल पिता और वह स्वयं मामा बने-

अन्ततः वह दिन भी आया तुरीन को प्रसव पीड़ा शुरू हो गई।

आहह

और उसके साथ ही शूलान वेणु और लड़ाकी पर वे मुसीबतें टूटना भी शुरू हो गई जिन्हें पैदा करने वाला था-

हिमराज जिसका एक ही सपना था तुरीन को बलपूर्वक अपना बनाना, लेकिन जब वह ऐसा ना कर पाया तो उसने तुरीन को तड़पा-तड़पा कर मारने का निर्णय ले लिया।

उसने तुरीन को घोर यातनाएं देनी शुरू कर दीं-

उन्हीं यातनाओं के बीच तुरीन के गर्भ से बच्चे हरिहरस रूपसे के लिए पैदा हुआ महाबली मोकाल का बेटा। जिसे हैरान हिमराज ने मौत की तरफ उछाल दिया-

लेकिन सिंहनी सा रूप धरकर तुरीन की स्वामिनी भक्त बिल्ली कपाला ने बचाया आने वाले समय के महाबली को-

महाबली पुत्र के बच जाने की वजह से क्रोध से कांप उठा हिमराज दीवानों की भांति उसने तुरीन को यातनाएं दी।

बस फिर उस हिममहल से तुरीन नहीं उसकी आत्मा बाहर निकली। उसी महल में तुरीन को तड़पा-तड़पा कर मार डाला हिमराज ने-

आहह

हो हो हा

लेकिन तुरीन को मौत देकर चैन से नहीं बैठ पायेगा वह। तुरीन पर किये एक-एक अत्याचार का हिसाब देकर मौत के मुंह में समाना होगा उसे...

हिमराज की दुनिया में प्रलय मचायेगी तुरीन की मौत!

जीवित नहीं छोड़ेंगे हम हिमराज को।

इधर आंसू रोके नहीं रुक रहे थे...

और इधर बहते-बहते सूख रहे थे--

आह! तुरीन हमें छोड़कर क्यों चली गई तू!

कृपया स्वयं को सम्भालिये स्वामी! रोक लीजिए अपने आंसुओं को...

...कहीं ये सीनों में सुलगती प्रतिशोध की आग को ठण्डा ना कर दें।

एक झटके से उठे शूतान के चेहरे पर विराजमान थे क्रोध के वे भाव जिसे देखकर क्रोध का देवता भी कांप उठता--

नहीं लड़ाकी! इस आग को आंसू क्या सात समुद्र भी मिलकर नहीं बुझा सकते। यह आग तो सिर्फ हिमराज के लहू से बुझेगी।

तुमने सही कहा।

...ऐसा करके ही हम न्याय कर पायेंगे इस...

...नन्हे ओकाल के साथ।

अच्छा ओकाल। ...तुरीन का बेटा!

लेकिन तुम कौन हो?

मैं कपाला दिवंगत स्वामिनी तुरीन की दासी! इस बालक के लिए अपनी मायावी शक्ति से मैंने मनुष्य रूप धारण किया है। क्योंकि किसी बालक को कोई स्त्री ही पाल सकती है।

तभी हृतप्रभ खड़े देख रहे थे नवयौवना कपाला को-

और उस भावी महाबली को जिसके अधरों पर कन्हैया जैसी चटखट मोहक मुस्कान नृत्य कर रही थी--

लेकिन इस समय बालक की वह मोहक मुस्कान प्रतिशोध की अग्नि में धधकते उन चारों को आकर्षित नहीं कर पा रही थी...

...जो एक ही स्वर में कह रहे थे कि तुरीन की मौत का---

बदला लेंगे हम!

हिमघाटी--

जहाँ दूर-दूर तक फैली हुई है हिम--

इस घाटी पर मौजूद है हिमराज का खूबसूरत हिममहल---

लेकिन इस समय हिमराज अपने महल में नहीं बल्कि हिम को काटकर बनाई गई एक गुफा में मौजूद है--

तुम्हारे हाथों तुरीन की हत्या हो चुकी है हिमराज! इसकी सूचना जब भोकाल को लगेगी तो निःसंदेह ही वह अपने पराक्रमी साथियों के साथ तुमसे तुरीन की मौत का बदला लेने के लिए तुम पर चढ़ दौड़ेगा।

आपने सही कहा गुरूदेव! तभी तो मैं सहायता के लिए आपकी शरण में आया हूं।

From : Ekam's Comic Vault

मैं अपने सभी शत्रुओं को अपने तक पहुंचने से पहले ही इसी हिमघाटी में दफन देखना चाहता हूं।...

... और ऐसा धनुषा चुटकी बजाते ही कर सकता है।

नहीं। इस छोटे से काम के लिए धनुषा जैसी महाशक्ति को मैदान में उतारना ठीक नहीं। अमरेतो में अपनी छोटी-मोटी शक्तियों से ही निबट लूंगा!...

... आने दो उन्हें हिमराज! तुम तक पहुंचने से पहले तुम्हारे सभी शत्रु मृत्युलोक पहुंच जायेंगे।

हिमराज के गुरू तुषाराचार्य की आंखों में शैतानियत नाच रही थी--

इसी बीच हिमराज की ओर मरोंस का ऐलान लेकर बढ़ रही थी वे आंधी-

सामने ही नजर आ रहा है हमारा लक्ष्य!

और तेज उड़ो वेणु, मैं जल्द से जल्द हिमराज के सामने पहुंच जाना चाहता हूं!

आपसे ज्यादा मैं उतावली हूं इस घाटी को दुष्ट के लहू से रंगने के लिए।

ओह!

वेणु के साथ-साथ अन्य सभी भी चौंके--

ये क्या हुआ ? वातावरण में एकाएक ये घना कुहासा कैसे छा गया ?

हाथ को हाथ सुझाई नहीं दे रहा !

सावधानी से उड़ान भरना वेणु ! कहीं ऐसा ना हो कि इस कुहासे के कारण हम किसी चट्टान से...

...टकरा जायें ! ओह !

भड़ाक

शैतान की बात पूरी होने से पहले ही हिंडोला भड़ाक की आवाज के साथ एक पहाड़ी से टकराया--

अगले ही क्षण हिन्डोले से वेणु की पकड़ छूट गई--

ओफ्फ !

और सभी आकाश के टूटे तारे की तरह नीचे की तरफ लहरा उठे--

जहां उन्हें मिलनी थी मौत--

तेजी से मोड़ की तरफ बढ़ते शुगल, लड़की और कपाला को अब सिर्फ वेणु का ही सहारा था--

लेकिन वेणु के सामने मोड़ पर ही एक अलग ही समस्या--

उफ! घने कुहासे की वजह से कुछ भी नहीं दिख रहा। ऐसे में मैं नीचे गिरते स्वामी, लड़की और कपाला की मदद करूं भी तो कैसे?

बहुत कुछ करने में समर्थ होने के बाद भी कुछ ना कर पाने के दुख ने वेणु को बुरी तरह विचलित कर रखा था।...

...कि अचानक वेणु को दिखाई दिया सपना--

मेरे फरसे से निकलने वाली ये किरणों की रोशनी कुहासे में स्वामी, लड़की और कपाला को ढूंढ़ने में मेरी सहायता करेगी।

फरसे से निकली किरणों की रोशनी घने कोहरे को चीरती चली गई--

कपाला

एक क्षण बाद ही वेणु को नजर आई कपाला--

अगले ही क्षण वह वेणु की पकड़ में थी--

धन्यवाद वेणु!

कपाला को बचाने के बाद-

वेणु ने शुरू कर दी खूंखार और लड़ाकी की तलाश--

जल्द ही उसे शूलाग नजर आया--

स्वामी!

अपनी गति बढ़ाकर वेणु एक क्षण में ही शूलाग तक पहुंची--

स्वामी! आप ठीक तो हैं?

ठीक तभी नीचे से गूंजी लड़ाकी की चीख--

ओह! निःसंदेह ही नीचे गिरती लड़ाकी पहाड़ों से टकरा गई है।

कहीं वह तल से टकरा-कर मारी तो नहीं गई!

हां वेणु!

SSSSHH

यह अत्यंत गहरी खाई है क्योंकि किरणों की रोशनी सैकड़ों हाथ नीचे जाकर भी खाई के तल तक नहीं पहुंच पाई है।...

...इसलिए अभी हवा में ही होगी लड़ाकी!

वह रही अचेत मुद्रा में।

ओह!...

...वह तो पर्वत के एक नुकीले शिखर की तरफ गिरती जा रही है...

मुझे अपनी गति बढ़ाकर उस तक पहुंचना होगा।...

...उसके नुकीले शिखर तक पहुंचने से पहले!

टल गई थी लड़ाकी की निश्चित मौत-

लेकिन कुहासे की समस्या अभी अपनी ही जगह थी-

ऐसे वातावरण में उड़ान भरते रहना हमारे लिए ठीक ना होगा वेणु!

आपने ठीक कहा स्वामी! हमें उतरना होगा।

कहानी 19वें पृष्ठ से जारी

आज के कलियुग में कोई भी, कभी भी बन सकता है जुर्म का...

तिरंगा

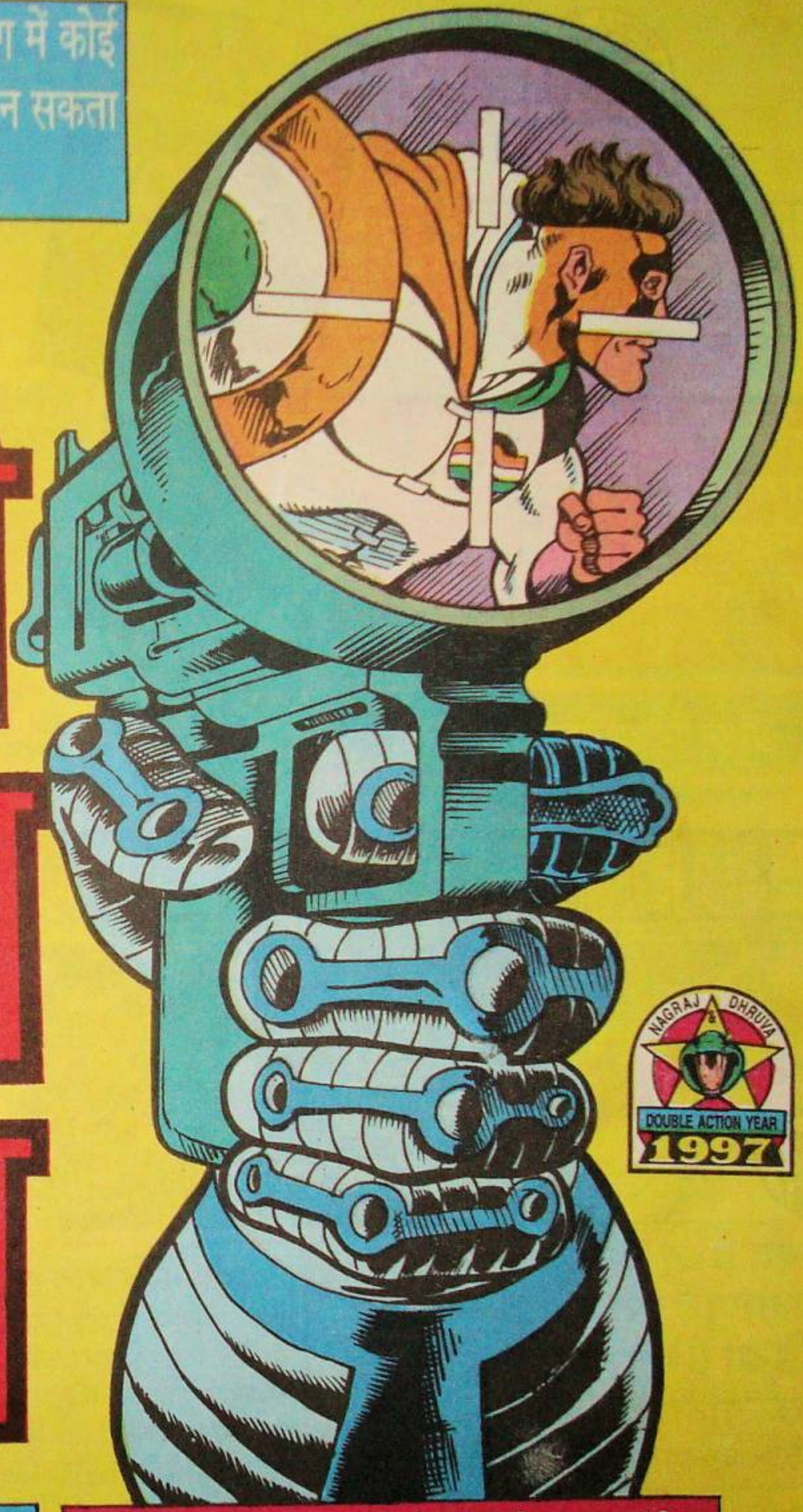

संजय गुप्ता की पेशकश

राज कॉमिक्स में तिरंगा सीरीज का रोमांचक कॉमिक

राज कॉमिक्स पेश करते हैं थ्री इन वन डाइजेस्ट का दूसरा सैट

प्रत्येक का मूल्य
25.00

डोगा ■ अदरक चाचा ■ पैडा ■ चोर सिपाही
परमाणु ■ स्नैक आउट ■ मक्खी ■ जौक
भेड़िया ■ ब्लास्ट ■ तेजी ■ मीन
बांकेलाल ■ बांकेलाल और यक्षकुमार ■ मुकद्दर का धनी ■ बांकेलाल और शादी का षड्यंत्र

थ्री इन वन डाइजेस्ट का पहला सैट

प्रत्येक का मूल्य: 25.00

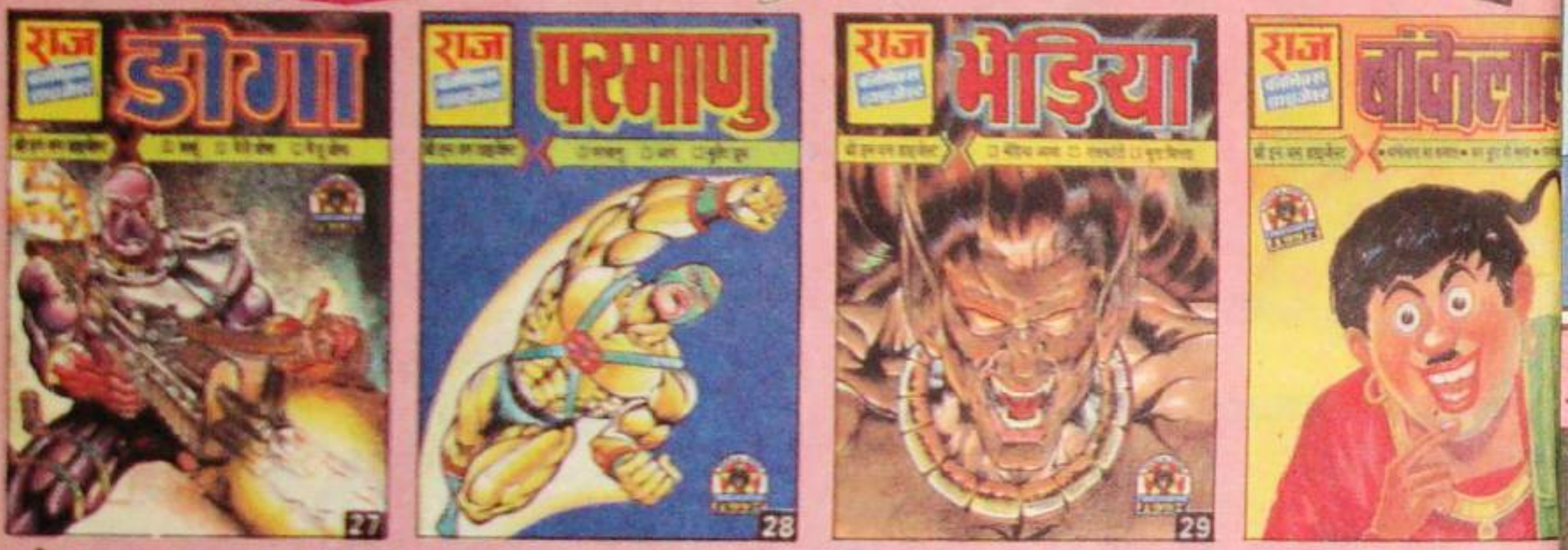

डोगा ☐ कर्फ्यू ☐ ये है डोगा ☐ मैं हूं डोगा
परमाणु ☐ परमाणु ☐ आग ☐ बुलेटप्रुफ
भेड़िया ☐ भेड़िया आया ☐ एलर्जांटो ☐ भूरा बिल्ला
बांकेलाल
☐ बांकेलाल का कमाल ☐ कर बुरा हो भला ☐ राजकोष के लुटेरे

कॉमिक पाठकों के लिए अनूठी भेंट

इस बार गर्मियों की छुट्टियों में हम लेकर आ रहे हैं यह एक और नायाब तोहफा यह मौका है उन कॉमिक पाठकों के लिए जिनके पास उपरोक्त कॉमिक नहीं और बाजार में भी खत्म हो चुकी हैं। हमने तीन-तीन कॉमिकों को सिलसिलेवार जोड़कर दोबारा छापा है जिससे कि एक बार फिर हमारे निराश पाठकों को उनकी मोस्ट वान्टेड कॉमिक मिल सकें। सभी कॉमिकें हिन्दी व इंग्लिश में उपलब्ध हैं

कॉमिक्स मंगाने का पता : राज पॉकेट बुक्स, 330/1 बुराड़ी, दिल्ली-110084 *आप अग्रिम मनीआर्डर भेजकर उपरोक्त कोई भी थ्री इन वन डाइजेस्ट मंगा सकते हैं। मनीआर्डर फार्म के निचले हिस्से पर 'डाइजेस्ट' का नाम व नंबर अवश्य लिखकर भेजें।*

और उसके लिए वह स्थान एकदम उत्तम रहेगा जहां हम उतरेंगे कपाला के प्रहारा की मदद से।

वेणु का इशारा समझते ही--

कपाला के प्रहारा से किया नीचे गुफा तक पहुंचने का वह अद्भुत प्रबंध-

सभी उस ढलवां रास्ते पर फिसलते चले गए -

गुफा में उतरने के बाद अब सभी पैदल ही आगे बढ़ते जा रहे थे-

आशा है इस लम्बी गुफा के समाप्त होने के साथ ही हमें मिल जायेगा...

...मैदान!

अब हम यहां से लड़ाकी के शरीर पर लगी चोटों का उपचार और कड़कती ठण्ड का कोई प्रबंध करके ही आगे बढ़ेंगे।

ठण्ड से बचने का उपाय तो उन पहाड़ी जानवरों के रूप में सामने दिख रहा है।

मैं अभी इनका शिकार करके इनकी खाल उतारने का प्रबंध करती हूं।

शूलान और कपाला को लड़की का उपचार करते छोड़कर आगे बढ़ी वेणु--

कुछ देर बाद खाड़ी जानवरों की गर्म खालों के साथ वापस लौटी--

तीन खालें ही प्राप्त कर पाई हूं मैं!

खून जमा देने वाली शीत को मात देने के लिए तीनों स्त्रियों ने इन गर्म खालों की पोशाक बना लीं।

तभी तीनों को उस भारी आवाज ने चौंकाया--

ठण्ड से तो बच जाओगे, लेकिन उस मौत से कैसे बचोगे...

...जो खण्डा तुम्हें देने आया है!

ओह! इसका मतलब हिमराज को हमारी खबर हो चुकी है। उसी ने इसे हमें रोकने के लिए भेजा है!

सही कहा, लेकिन आज यह क्या साक्षात मृत्यु भी हमें उस शैतान तक पहुंचने से नहीं रोक सकती!

खण्डा के लिए किसी को रोकना कोई मुश्किल काम नहीं है...

...क्योंकि उसके फरसे का एक ही वार हिम को खण्ड-खण्ड करके उसमें बना देता है अत्यंत गहरा...

...दर्रा...

अरेऽऽ!

झूलान के पैरों के नीचे से बर्फ खिसकती चली गई वह लड़खड़ाया...

...और अगले ही पल गहरे दर्रे में गिरता चला गया...

झूलान!

कराल हँसती झूलान की तरफ लपकी...

...जबकि दहाड़ती हुई वेणु बर्दी खण्डा की तरफ-

दुष्ट!

उगल दिया वेणु के फरसे ने किरणों का लावा-

From Ekam's Comic Vault

लेकिन खण्डा ने उसे अपने तक पहुंचने नहीं दिया-

खण्डा का फरसा दर्रा बनाने के साथ-साथ और भी बहुत से कमाल दिखाता है।...

...यह अनोखे बचाव भी करता है।...

...और अद्भुत वार भी!

ओह!

मेरे फरसे का कमाल तो तुझे तब दिखेगा जब तेरी गर्दन कटकर नीचे पड़ी होगी।

तेज तो तू बहुत है लड़की, मगर अफसोस कि तू खण्डा की तरह युद्ध में कुशल नहीं...

तेरी मात खाने का यही कारण है।

सड़ाक

इधर वेणु की जान पर बन आई थी-

और इधर शूतान की जान पर
चकोरी दाँ का तलवार उसे मारने के लिए
आ रहा था-

लेकिन अगले ही क्षण उसका
वह निशाना-

अगले क्षण के करीब पर उसी प्रहार
को रोकने था--

शुक्र है शिकंजा
सही समय पर शूतान को
पकड़ने में सफल हुआ।

शूतान की जान बचा चुकी कपाल...

...वहीं जानती थी कि खुद उसकी जान पर मौत का काला साया मंडरा रहा था-

इसने मेरे शिकार
को बचाया है इसलिए
सबसे पहले मैं इसे ही
अपना शिकार
बनाऊंगा।

पलक झपकते ही कपाला के सिर पर जा पहुंचा खड्ग-

अब कपाला और उसकी मौत के बीच सिर्फ पलक झपकने तक का और फासला था...

...कि तभी लहराया वह हाथ और खड्ग के हाथ से निकल गया उसका प्रलयंकारी फरसा-

चमत्कार हुआ था ये-

इस समय चमत्कार केवल एक ही तलवार कर सकती थी—

लड़की की तलवार-

अगर इस बार तूने कपाला का अहित करने की सोची तो अस्त्र की तरह ही तेरा शरीर भी कटकर गिरेगा।

ऐसा है तो मैं इसे मारने का विचार बदल देता हूं...

...लेकिन तुझे नहीं छोड़ूंगा!

धोखे से किये गये प्रहारों से मैं बचना ही नहीं...

...धोखेबाजों पर वार करना भी खूब जानती हूं।

अचानक खूब ऐसे ही मजबूत घायल हो गया खण्डा–

मैं तेरे टुकड़े-टुकड़े कर डालूंगा।

भड़ाक

उछलकर दूर जा गिरी लड़की–

इसीके साथ ही मंच से खेला पड़ता चला गया कपाला का चेहरा–

उफ! बुरी तरह घायल लड़की खण्डा का मुकाबला अधिक समय तक नहीं कर सकती। खण्डा उसे मार डालेगा।

मुझे दुख है कि मैं लड़की को मरते देखते रहने के सिवा कुछ नहीं कर सकती...

अगर मैंने प्रहरा की सहायता से लड़की को बचाने का प्रयास किया तो शूलान मारा जायेगा।...

...क्योंकि मेरा ध्यान भंग होते ही प्रहारा से उस शिकंजे का संबंध टूट जायेगा जो शूलान को दर्रे में से ऊपर खींच कर ला रहा है।

लड़की को बचाने के लिए कोई कुछ नहीं कर सकता था–

लेकिन वह लड़ाकी थी जिसने अपनी युद्धकलाओं से सीखा था अपने को बचाना...

... और विपरीत परिस्थितियों में भी शत्रु का डटकर मुकाबला करना, और प्राण रहते करते ही रहना ...

... शरीर थकने लगे तब भी...

...पांव कांपने लगें तब भी-

इसी तरह युद्ध का परिणाम अपने हक में किया जा सकता है –

अन्तिम सांस तक शत्रु से लोहा लेने का संकल्प...

...अन्ततः लड़ाकी की विजय और खड्डा की मौत के रूप में रंग लाया-

अहह

स्वच्च

खड्डा की चीख से सारी झिंघारी गूंज उठी–

उधर वेणु के जाने के बाद ही हिमालय के ऊपरी दर्रे में क्या घटित हो रहा था-

आपकी एक अत्यंत विध्वंसकारी शक्ति खण्डा समाप्त हुई गुरुदेव! अब तो आपको पता चल गया कि वे आसानी से समाप्त होने वाले नहीं...

...धनुषा ही उन्हें ठिकाने लगा सकता है!

...भेजिए इसे!

अद्भुत! शताब्दियों बाद मुझे शक्ति परीक्षा का अवसर मिला है। धनुषा को भेजकर मैं इस सुनहरे अवसर को नहीं गंवाऊंगा...

...अपनी शक्तियों से ही मैं उन्हें पराजित करने का प्रयत्न करूंगा और देखूंगा कि कौन जीतता है...मेरी शक्तियां या...

...मेरे शत्रु-

खण्डा का यह वरद मुझे ठण्ड से बचाने में सहायक होगा!

खण्डा के वरद से स्वयं को ठण्ड से बचाने का उपाय करके बोला शूलाक्ष-

अब हमें शीत दर्रे की तरफ बढ़ना चाहिए।

आइये में उड़ने के लिए एकदम तैयार हूं।

इस घायलावस्था में वेणु हम सबको लेकर उड़ पायेगी इसमें मुझे संदेह है।

कपाला को जिस बात का डर था-

वह अगले ही पल सामने आ गई--

ओक्क!

वेणु हम सबका वजन लेकर उड़ने में असमर्थ है!

ओह!

एक बार फिर नाकामयाब प्रयास करती वेणु को शूलान ने रोक दिया-

रहने दो प्रिय! इस दशा में अगर तुमने हम सबको लेकर किसी तरह उड़ान भर भी ली तो यह तुम्हारे लिये प्राणघातक होगा!

तो फिर, क्या हम दुष्ट हिमराज से अपना बदला लेने उस तक नहीं पहुंच पायेंगे?

उत्तर में सिंह की मानिंद गुर्राया शूलान-

अपने वैरी के बल पर उस दरिंदे तक पहुंचना है हमने...

...और पहुंच कर ही रहेंगे। चाहे उसके लिए हमें पैदल चलकर ऐसे सात हिमपर्वत ही क्यों ना पार करने पड़ें!

शूलान की तरह ही बदले की आग में धधकते सभी एक ही स्वर में कह उठे-

हां, हम सब पैदल ही आगे बढ़ेंगे।

तभी सभी चौंके-

भौंऽऽ भौंऽऽऽ

भौंऽऽऽ

पहाड़ी कुत्ते!

उस पहाड़ी कुत्ते को देखकर क्षण भर के लिए कयाला की आंखें-

ये कुत्ते आगे बदले में हमारी मदद कर सकते हैं।

कैसे?

ऐसा चल जाएगा। तुम वेणु और लड़की की मदद से पेड़ काटो।

मैं इन कुत्तों को बंदी बनाती हूं।

कयाला प्रहारा की मदद से कुत्तों को बंदी बनाने में जुट गई-

और शाल,वेणु व लड़की पेड़ काटने में--

शीघ्र ही---

अब पेड़ के इस तने को बीच में से खोखला करके नाव जैसा रूप देने में मेरी सहायता करो।

कुछ ही पलों बाद पालतू कुत्तों की मदद से आगे बढ़े शूताव, वेणु, लड़ाकी और कपाला--

वाह! कपाला! वास्तव में अद्भुत उपाय सोचा है तुमने आगे बढ़ने का।

भौंऽऽ भौंऽऽ

अब हम अतिशीघ्र शीत दर्रे में पहुंच जायेंगे।

पवनगति से आगे बढ़ने की जो चमक सभी के चेहरे पर नजर आ रही थी--

वह कुछ ही देर बाद गायब हो गई--

अरे! यह क्या? ये कुत्ते तो अनियंत्रित ढंग से दौड़ने लगे!

भौंऽऽ भौंऽऽ

इन्हें रोकने की कोशिश करो।

ओफ्फ!

ओह! ये तो रुक ही नहीं रहे!

ये हमें किसी संकट में फंसा सकते हैं। इन्हें रोकने के लिए तो अब इन्हें खत्म ही करना होगा।

वेणु ने अपना फरसा और लड़ाकी ने अपनी तलवार सम्भाल ली-

लेकिन दोनों अपने-अपने अस्त्र का प्रयोग कर पातीं उससे पहले ही-

कुत्ते एकाएक रुक गये ?

इस खतरनाक स्थान पर ही आकर क्यों रुके ये ?

हमें यहां लाकर क्या दर्शाया है इन कुत्तों ने ?

वफादारी!

और ये वफादारी इन्होंने दिखाई है!...

... अपने स्वामी नाथादी के प्रति!

ओह! संकट!

हां, लेकिन तुम इससे बच नहीं पाओगे!

बचो!

झटक

ओफ्फ!

शैतान हिमराज की कोई भी शक्ति हमारी बदले की आग को ठण्डा नहीं कर सकती!

मैं ठण्डा करूंगा भी नहीं...

... मैं तो उसे समाप्त करूंगा...

... तुम्हारे ही साथ।

झटक

ओफ्फ!

जो मृत्यु को भी हराने की ठान कर चले हैं उन्हें तुम जैसे भुजंगे समाप्त नहीं कर सकते!

क्रोध से गरजते उस सम्मोहक सर्पाट के हाथ उठ गये.

आंखें सम्मोहक काजादू छोड़ने के लिए फैल गईं-

लेकिन उसी पल पहाड़ी की चोटी के पीछे से निकले सूर्य की तेज किरणें बर्फ से टकराईं-

हिम सतह तेजी से चमकी--

ओह सभी को सहसा अंधा करती चली गई-

उफ्फ!

आहह!

वह चमक शूताज के लिए अत्यंत हानिकारक सिद्ध हुई थी-

क्योंकि उसके सम्मोहक करतब के लिए अपनी तीव्र फैला रखी थी--

उफ! मैं अपनी आंखें खोल नहीं पा रहा हूं। आहह।

इस चकाचौंध को हम जैसों की अभ्यस्त आंखें ही सह सकती हैं।

भड़ाक

ऐसी दशा में भी घायल बोनी की तरह जरजरी सम्भली कपाल--

तेरी अभ्यस्त आंखें निसंदेह ही ऐसे वारों के लिये अभ्यस्त नहीं होगीं।

ना ही तेरा शरीर अभ्यस्त होगा इसके लिए!

वाह! बहुत ही अद्भुत शक्ति है तेरे पास...

...लेकिन मेरे सामने एकदम बोनी है...

कड़ाक

...तेरी सारी शक्ति!

ओफ्फ!

मेरी शक्तियों से पार पाना मुश्किल है सुन्दरी!

ओफ्फ!

ये बचाव किया मैंने स्वयं का तेरे प्रलयंकारी अस्त्र से।

लेकिन हमारे हाथ में थमे अस्त्रों से कैसे बचेगा?

अपनी तरफ बढ़ते अपने शत्रुओं को रोकना...

आर्ह्ह्ह्ह्

...खूब जानता हूं मैं...

आह्ह्ह्

अब तुम्हें सम्भलने का अवसर देने की मूर्खता नहीं करूंगा मैं।

वेणु और लड़ाकी को बंदी बनाने के बाद-

मायावी ने अपनी शक्ति से हिम की धरती में बनाया वह गहरा गड्ढा...

...और फिर--

जाओ उस गड्ढे में जहां मृत्यु तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही है।

ओह!

आह!

हा हा हा। तिल-तिल करके मरोगी अब तुम दोनों।

दूसरे ही क्षण वेणु और लड़ाकी की चीखों से वातावरण गूंजने लगा--

नहींऽऽऽऽ

नहींऽऽऽऽ

कटार की भांति शमशान के कक्षों में प्रवेश कर रही थी वेणु और लड़की की चीखें-

अगर मैंने वेणु और लड़की को बचाना है तो अपनी आंखें खोलनी ही होंगी। चाहे वे तेज हिम चमक से फूट ही क्यों ना जायें?

आहहSSS

आहहहSSS

दूसरे ही क्षण शक्तिराज ने अपनी आंखें एक झटके से खोल दीं।

वाह! सूर्य पहाड़ी की चोटी के पीछे चला गया है! इसका तात्पर्य देवता भी चाहते हैं कि हम सब जीवित रहें और समाप्त हो...

इसी के साथ उसकी बाहें खिंच गईं-

भड़ाक

...यह शैतान!

अबलाओं पर अपनी शक्ति का प्रयोग कर करते हो दुष्ट!-

...मुझसे टक्कर और मुझे दिखा कि कितनी शक्ति है तुझमें।

तुझ जैसी चींटी को अपनी मानसिक शक्ति दिखाने की आवश्यकता नहीं है। तुझे तो अपनी शारीरिक शक्ति से ही समाप्त कर डालूंगा।

मुझसे टकरायेगा तो खुद जान जायेगा कि कौन किसको समाप्त करता है।

ऐसा है तो तुझसे मुकाबला करना ही होगा, लेकिन यह मुकाबला यहां नहीं...

...यहां होगा।

!!

धड़ाक

यहां से तेरी लाश ही नीचे आयेगी दुष्ट!

कहावत है बेवकूफ चूहा हाथी से भी टकरा जाता है-

और उसे अपने वारों का निशाना बना लेता है

लेकिन इस कहावत के साथ यह बात भी अपनी जगह सत्य है कि...

...चूहा हाथी पर कितने भी वार करने में सफल क्यों ना हो जाये...

...चूहा आखिर चूहा ही रहता है। वह हाथी जैसा बलशाली और मारकशक्ति वाला नहीं बन सकता...

...जबकि हाथी हाथी ही रहता है...

...और हाथी अपने बल और शक्ति से लड़ाई को अपने पक्ष में कर ही लेता है।

मायावी की तरह-

उफ! कुछ करो वेणु बहन, वरना वह दुष्ट स्वामी को मार डालेगा!

अपने मान सम्मान की इस लड़ाई में वे हमारा बीच में आना पसंद नहीं करेंगे। हम उनके लिए कुछ नहीं कर सकते।

हम कुछ कर नहीं सकते और शुतान कुछ कर नहीं पायेगा। ऐसे में तो माया की के हाथों निश्चित है...

शुतान की मौत।

लेकिन मौत के शुतान तक पहुंचने से पहले ही उस तक पहुंची वह अद्भुत रस्सी--

और पहुंचा मंत्र सम्राट तिल्ली--

ज़ाक़ऽऽ

माया की के एक तेज वार से मौत की तरफ लपक उठा था शुतान--

सम्भालिये शैतान को!

शैतान को सुरक्षित नीचे उतारने के बाद–

क्रोध से भभकता तिल्ली मायावी के सामने उतरा–

मुझे गौर से देख ले शैतान! कहीं मृत्यु के पश्चात् तुझे इस बात का दुख ना हो कि...

...तू सामने खड़ी साक्षात मौत को ना देख सका।

लेकिन तुझे अपनी मौत के बाद इस बात का दुख अवश्य होगा कि तूने मुझे सम्भलने का अवसर क्यों दिया।

मायावी ने कर दिया अपनी मानसिक शक्ति का एक घातक प्रहार–

लेकिन मंत्र के बल पर तिल्ली ना सिर्फ अपने बचाव का...

...बल्कि उस पर वार करने का प्रबंध पहले ही कर चुका था–

तिल्ली के सामने ना तेरी शैतानी ठहर पायेगी!...

...और मातृ!

मुझे पराजित करने का विचार तेरे हृदय से निकलेगा असुर...

...लेकिन तब जब तेरे शरीर से तेरी जान निकल जावेगी!

OOOOM

उफ!

अद्भुत शक्तियों के दो अनोखे लड़ाकों की सशक्त लड़ाई थी ये--

लेकिन फिर भी दोनों में जमीन-आसमान का अन्तर था--

एक जहां अपने स्वामी के आदेश का पालन करने के लिए लड़ रहा था...

...वहीं दूसरा प्रतिशोध की ज्वाला में झुलसता किसी की मृत्यु का बदला लेने हजारों कोस दूर से पृथ्वी पर आया था जिसका एक ही उद्देश्य था—

तुरीन के हत्यारे तक पहुंचना...

From Ekam's Comic Vault

...रास्ते में आई हर मुश्किल को हटाते हुए!

मायावी के शरीर को कई हिस्सों में बांटकर...

...नीचे पहुंचा वह अद्भुत मांत्रिक--

शूतान! तुम ठीक तो हो ना!

हां, मित्र! तुरीन के हत्यारे के टुकड़े-टुकड़े किये बगैर भला शूतान मर भी कैसे सकता है!

आंसुओं के साथ जमाने भर का क्रोध भरता चला गया तिल्ली की आंखों में-

दो नहीं हजारों टुकड़ों में बंटेगा वह हत्यारा और जब तक मैं स्वयं अपने हाथ से ऐसा नहीं कर दूंगा चैन जहीं मिलेगा मुझे।

अचानक तिल्ली की नजर कपाला की पीठ पर बंधे बालक पर जा पड़ी--

ये बालक...

ये उसी शेरनी का शावक है जिसे हम तुरीन के नाम से पुकारते थे।

तुरीन का बेटा!

तड़पकर तिल्ली ने कपाला की पीठ से शिशु को अलग किया-

और तब तो मौत को बर्फ देखे वाला वह दयालजी फूट-फूटकर रो पड़ा जब उसने शिशु को अपने गले से लगाया---

ओफ्फ! तूफान! तू क्यों हमें छोड़कर चली गई?

इस तरह रोने वाला दिल्ली ही नहीं था---

आगे आगे शूलाल, देपु, लड़की और दयालजी रो रहे थे-

और कुछ देर बाद जब सूखे आंसू...

...तो सूज आए आंखों की आंखों में क्रोध की अधिकता से कांपने लगा सभी का शरीर-

जबकि वहां हिमराज और उसके गुरु की आंखों में विराजमान था आश्चर्य-

मायावी को पराजित करने वाली शक्ति भी इस संसार में मौजूद होगी ऐसा मैंने नहीं सोचा था!

अद्भुत है वह मांत्रिक!

त... तो क्या अब वह मेरे सभी शत्रुओं के साथ मुझ तक पहुंच जायेगा।

नहीं! क्योंकि उसे रोकने वाली एक बहुत बड़ी ताकत अभी मेरे पास सुरक्षित है!

कुछ ही दिन बाद--

वो सामने हिमखंड नजर आ रहा है। कुछ ही समय में हम उस तक पहुंच जायेंगे!

नहीं पहुंच पाओगे...

...क्योंकि उससे पहले ही मृत्युलोक में पहुंचने जा रही हैं तुम सबकी आत्माएं।

इतना सच्चा निशाना कौन है इन बाणों को छोड़ने वाला।

में! धनुषा! तुम्हारे पैरों के पास जमीन में धंसे मेरे तीर इस बात का संकेत हैं कि तुम्हारा यह सफर खत्म हुआ...

सक्के सक्के

... अब तुम सब मौत के सफर पर जाओगे।

हम सिलके जैसे बाणों से हमें मारने की सोच रहा है मूर्ख, जिसमें हम तक पहुंचने तक की भी शक्ति नहीं है।

सेंय

कचक

क्रोध दूसरी से सकपकाये लड़ाकी और वेपु के हथियारों से सभी बाणों को रास्ते में सफाया कर दिया-

लेकिन उसे भी हैरानी उस समय हुई जब सामने खड़ा वह धनुर्धर-

उन बाणों के टूटने का मुझे कोई दुख नहीं है क्योंकि...

... ऐसे बाणों का भण्डार है मेरे पास।

इस बार सामने आये वाली थी कपाल--

देखती हूं कब तक भरा रहता है तेरे बाणों का भण्डार!

मेरे भण्डार को खाली करने का विचार त्याग दे सुन्दरी! क्योंकि वह मात्र साधारण बाणों से ही नहीं.!...

... ये अद्भुत 'सर्पचाल' बाणों से भी भरा हुआ है जो सामने खड़ी हर मुश्किल को पार करके...

... ठीक अपने निशाने पर जा लगते हैं।

आईईईईई

ओहहहह

धीएएएएए

कपाल वेपु और लड़ाकी के कंठों से निकली कराह--

...और तिल्ली के कंठ से निकली वह दहाड़ –

लगता है तेरा अन्त मेरे ही हाथों से लिखा है।

तुम रुको मित्र! मैं देखता हूं इसे।

इधर सम्मोहन करने के लिए उठे शूलान के हाथ-

और इधर धनुषा के हाथों में हरकत हुई-

दूसरे ही पल-

ओह!

एक योध्दा की भांति लड़ कायर! मायावी प्रपंचों का सहारा ना ले। सम्मोहन छोड़कर हथियारों से लड़। ध्यान रख मेरा तरकश भी सैकड़ों मायावी बाणों से भरा पड़ा है।

शूलान की सम्मोहन शक्ति को बेबस करने के बाद...

...पलटा वह धनुर्धारी तिल्ली की तरफ –

अब पहले तुझे भी बेबस कर दूं, फिर सोचूंगा कि तुम सबको एक साथ कैसे काल के गाल में धकेला जाये।

काल किसका आया है इसका निर्णय अभी हो जायेगा और वह निर्णय करने वाला तेरा धनुष नहीं...

...मेरा गड़ासा होगा!

यह लड़ाई बाण से ही आरम्भ हुई थी मूर्ख!...

...इसलिए इसे बाण से ही समाप्त होना है।

ऐसा ही सही, लेकिन लड़ाई समाप्त करने वाला वह...

...बाण भी मेरा ही होगा।

बचपन से खेलता आया हूं मैं इनसे।

गुजरते हुए हर पल के साथ भीषण होती जा रही थी वह लड़ाई।

जहां एक ने मंत्र की आग में खुद को तपा कर कुण्डल बजाया था...

लेकिन उसने ध्यान कोई भी नजर नहीं आ रहा था—

और ऐसा होता भी तो कैसे—

अद्भुत लड़ाके जो थे दोनों—

...वहीं दूसरे ने जन्वास की मट्टी में अपना पेशे-आराम अलाकर खुद को धनुर्धर बनाया था।

जहां मंत्र पढ़ते ही एक के हाथ में अद्भुत अस्त्र प्रकट होते थे...

...वहीं दूसरे का तरकश दिव्य बाणों से भरा था।

ना एक की मंत्र शक्ति चूक रही थी—

और ना दूसरे के तरकश से तीर खत्म हो रहे थे-

लेकिन फिर भी हर लड़ाई की तरह इस लड़ाई को भी खत्म तो होना ही था--

बस! अब इस सारी आंख-मिचौली के साथ तेरा जीवन भी समाप्त होने जा रहा है क्योंकि मेरे हाथ में थमा यह बाण लक्ष्यभेदी बाण है।

और इस लड़ाई को खत्म करने की पहल करनेवाला था धनुषा-

...और लक्ष्यभेदी बाण का सिर्फ एक ही लक्ष्य होता है!...

...अपने लक्ष्य को भेदना!

आज ऐसा नहीं होगा...

...आज अपने लक्ष्य तक किसी भी दशा में नहीं पहुंच पायेगा यह बाण!

ओह!

तिल्ली ने इस वार के असफल होने के साथ ही...

...लपककर एक चट्टान की ओट लेली -

लेकिन वह चट्टान लक्ष्यभेदी बाण को रोकने में सफल नहीं हो पाई -

भड़ाक

हा हा हा! तेरा कोई भी मंत्र तुझे इस मृत्यु से नहीं बचा पायेगा।

तिल्ली द्वारा खड़ी की गई एक और रुकावट को ध्वस्त करता वह बाण -

अब जब तिल्ली की तरफ बढ़ा तो सिहरन दौड़ गई उसके शरीर में -

और ऐसा होना भी क्यों न लाजमी थी, ठीक उसकी आंखों के सामने -

एक क्षण बाद ही...

भड़ाक

धड़ाम

...और दहाड़ती शेरनी का लोथड़ा पेड़ से गिरा...

गिरती के शिकार को पकड़कर...

दूसरे ही क्षण वहां प्रलय आ गई-

शेर के पेट की तरह गिरती बर्फ से ढकी पहाड़ी-

हंसी के साथ सारा शीत दर्रा शूलराज, वेरु, लड़की और कपाल की दिशा से गूंजता चला गया—

अहहहहहह

और वे चीखें निःसंदेह ही उनकी अन्तिम चीखें थीं-

बर्फ के उस पहाड़ के नीचे दफन होकर रह गये थे सभी—

खुशी से झूम ही उठे थे हिमराज और उसकी पुत्र—

देखा हिमराज! मैं ना कहता था धनुषा मेरी सबसे बड़ी शक्ति है। इसका मुकाबला कोई नहीं कर सकता!

सचमुच मेरे शत्रुओं को समाप्त कर मुझे अजेय बना दिया है धनुषा ने।

... अब मैं चैन की नींद सो सकता हूं... अरे!

य... ये क्या?

...तुमने मेरे सामने यह तीर क्यों छोड़ा धनुषा?

तुम्हें तुम्हारा वचन याद दिलाने के लिए। तुम्हें यह बताने के लिए कि अब तुम्हें मेरी बहन को अपनी पत्नी और मेरे भांजे को भावी सम्राट घोषित करना है।...

...मैं वही वचन तुमसे लेकर तुम्हारी शत्रुओं को समाप्त करने का पाप करने को तैयार हुआ था।

बाद है ना?

अ... हां... हां बाद है... बाद है भला हिमराज अपने इस वचन को कैसे भूल सकता है...

...क्यों हिमराज?

ह... हां... हां गुरूदेव!

अपने चेहरे पर परम संतोष के भाव लिये गुफा से निकला धनुषा-

आखिर आज मैंने एक भाई होने का कर्तव्य निभा ही दिया। हिमराज की सैकड़ों रानियों में से अपनी बहन को उसकी वास्तविक पत्नी और उसके पुत्र को भावी सम्राट का अधिकार दिलाने में सफल हो ही गया मैं...

... और ऐसा करने के लिए मैंने अपने हाथ पांच निर्दोष व्यक्तियों के लहू से रंगे हैं...

इस कृत्य के लिए पता नहीं देवता मुझे माफ करेंगे या नहीं।

सोचते-सोचते बोझिल होती चली गई धनुषा की आंखें-

और तब जब उसने अपनी आंखें बंद कीं-

उफ!

नहीं!

चीख मारकर उठ बैठा धनुषा-

और फिर दूसरे ही पल वह आग बिखेरता बाज खड़ा हुआ---

नहीं!

अगले ही क्षण वह धनुषा पागलपने की अंतिम हद तक क्रोधित हो अपने हाथों से आग उगल रहा था---

पुनः देर बाद जब धनुषा के हाथ रुके तो पटी की पटी रह गईं उसकी आंखें--

नहीं! नहीं!

धनुषा के कंठ से निकली वे चीखें निश्चय ही उस घाटी में आने वाले तूफान की सूचक थीं-

जिसने पूरी तरह बेखबर था हिमराज---

हा हा हा! मेरे सबसे बड़े शत्रु समाप्त हुए हैं आज। घोषणा कर दो कि आज पूरी घाटी में उत्सव मनाया जाये!

उत्सव को नहीं मातम की तैयारी कर हिमराज क्योंकि...

??

...हम सब अपनी जान बचाकर तेरे प्राण पखेरू को उड़ाने आये हैं।

त... त... तुम जीवित हो!

हां, और यह कैसे हुआ ये हम भी नहीं जानते। इतना जरूर पता है कि जब मैं धनुषा के लक्ष्यभेदी बाण से बचने का प्रयास कर रहा था तो...

"...अचानक मुझे एक तरफ अपना प्रतिरूप बनता दिखाई दिया।

!!

मैं कुछ समझ पाता उससे पहले ही—"

!!लक्ष्यभेदी बाण मेरी प्रतिरूप की बाजियां उड़ाता हुआ हिम पहाड़ी से जा टकराया!!

!!और फिर वह हिम पहाड़ भरभराकर हम सबके ऊपर गिरता चला गया!!

"लेकिन हमारा बाल भी बांका ना हुआ क्योंकि एक रहस्यमयी शक्ति हमारी ढाल बन गई थी!"

मैंने अपने मंत्रों से हमारी मददगार उस रहस्यमयी शक्ति का स्रोत पता करने की बहुत कोशिश की है, मगर मैं सफल नहीं हो पाया हूं। लेकिन इतना जरूर है कि वह शक्ति है हमारी शुभचिन्तक ही।

हिमराज की कड़कती आवाज से तिल्ली का ध्यान भंग किया---

संयोग से मृत्यु से एक बार बचने के बाद तुम सबकी भलाई इसी में थी कि तुम वापस लौट जाते, क्योंकि ऐसा करके तुम...

...स्वयं को इन अस्त्रों का शिकार होने से बचा लेते!

तेरे ये अस्त्र हमारी परछाईं तक भी नहीं पहुंच पायेंगे धोखेबाज!

जबकि मेरी मंत्रशक्ति से बने ये अस्त्र छलनी कर देंगे तेरे शरीर को!

तुम्हारे इन अस्त्रों को छलनी करने के लिए शरीर अवश्य मिलेगा...

...लेकिन वो शरीर मेरा नहीं इनका होगा!

आहह क्च्च

अब बृज पर कोई वार करने से पहले वह सोच लेना कि वे बूढ़े नहीं कई निर्दोषों को मारेंगे।

उफ! अपनी गलतियों को ही इस दुष्ट ने अपनी ढाल बना लिया है

अब बृज उस पर वार नहीं कर सकते!

उफ! धनुषा द्वारा थोड़े गये धुएं के बल्लों से अगर मेरी आंखें प्रभावित नहीं होतीं तो अब तक मेरे सम्मोहन में फंस गया होता यह दुष्ट!

क्रोध से कांप उठे सभी--

आज तू बचने के चाहे जितने जतन कर ले कालर, लेकिन तू अब नहीं पायेगा!

मृत्यु तेरा भाग्य बनकर ही रहेगी!

आज तुझे तूरीन पर किये एक-एक जुल्म का हिसाब देना ही होगा!

अंगार सी दहकती सभी की आंखें ड्रैगराज पर टिकी थीं...

...इसलिए या तो कोई उस भयंकर पक्षी को देख सका--

और या उसके कारनामें को--

अरे!

अभी तक भोकाल का जो बेटा कपाला की पीठ से बंधा था...

...वह अब इस पक्षी की बदौलत तुषाराचार्य के हाथों में पहुंच चुका था--

गुरुदेव! सही समय पर पहुंचे आप!

बालक को छोड़ दे दुष्ट!

वहीं रुक जाओ! अगर तुममें से किसी ने भी मेरी तरफ बढ़ने या मुझ पर वार करने का प्रयत्न किया तो मार डालूंगा मैं इस बालक को!

अमीत से ही चिपककर रह गये अभी के कदम...

...क्योंकि सभी को अपनी जान से ज्यादा प्यारी थी तूरीन की वह-

आखिरी निशानी--

अब तुम सबके कदम मृत्यु के रास्ते पर चलेंगे।

एक क्षण बाद ही क्षिप्रराज सभी को बेकाम कर चुका था--

हा हा हा! तुरीन से बहुत प्यार करते थे तुम सब! मृत्युलोक में जाकर अब उससे मूल मिलना!

और ये सब वहां पहुंचेंगे...

... इन खूंखार पक्षियों की बदौलत!

हा हा हा!

हा हा हा!

ओह

ओह!

आहह

ओफ्फ!

आहह

मोह!

तुरीन के हत्यारे को समाप्त करने आये वे पराक्रमी अब खुद समाप्त होने जा रहे थे--

क्योंकि उसने से कोई भी नहीं चाहता था कि उसकी आंखों के सामने ही समाप्त हो जाये पुरोहित और मोहजाल का जाल लेकर दानव --

हुंह क्या हुआ

लेकिन भविष्य के उस पराक्रमी के अधरों पर खेल रही थी मुस्कान---

शायद उसे आभास हो गया था कि आ पहुंची थी--

मदद--

उस विशेष बाण के रूप में...

...जो उसे पापी के हाथों से छुड़ाकर-

उस सुरक्षित हाथों में ले गया था जिनका स्वामी था—

धनुषा!

हां मैं! लेकिन मैं अकेला ही नहीं हूं!...

... मेरे साथ ये दोनों भी हैं जिन्हें तुमने उनका अधिकार देने की बजाये मौत देकर हिम के नीचे दबा दिया था।

!!

पहचान इन्हें हिमराज! ये मेरी वही बहन और भांजा हैं जिन्हें इनका अधिकार दिलाने के लिए मैं वर्षों से तेरी और तेरे गुरू की दासता करता आया।...

...मुझे क्या मालूम था कि बहुत पहले ही ये तेरे अत्याचार का शिकार हो गये हैं।

य... ये... वी... वी...

बस शैतान! बंद कर अपनी जुबान, क्योंकि आज मेरे बाणों के बोलने का समय है!

पहले इनका बोलना तो सुन ले धनुषा! जो तेरी बोलती को सदा के लिए बंद करने हेतु तेरी तरफ बढ़ रहे हैं।

धनुषा के बाणों की चिंघाड़ के आगे तो आज मौत की आवाज भी बंद हो जायेगी।

इनकी क्या बिसात है!

बारिश की बूंदों की तरह बरस उठे बाणों ने---

मानों वर्ग प्रलय मचा दी--

धनुषा हमारा मददगार बन गया है। लेकिन वह हिमराज व उसके गुरू का मुकाबला ज्यादा समय तक नहीं कर सकता।

...हमें शीघ्र ही इन बंधनों से मुक्त होकर उसकी सहायता करनी होगी!

लेकिन इतने शक्तिशाली बंधनों से हम मुक्त कैसे होंगे? आह!

ऐसे में मेरी सम्मोहन शक्ति ही कुछ कर सकती है और मेरी सम्मोहन शक्ति तभी काम कर सकती है जब मैं अपनी धुएं से प्रभावित आंखों को इस लायक बना लूं कि वो सम्मोहन कर सकें!

अपने प्रयासों में जुट गया शैतान...

...अन्ततः ही सफल हुआ---

इसी बीच हिमराज अपने प्रयास में सफल होने जा रहा था-

इस समय धनुषा का ध्यान गुरूदेव की शक्तियों को नष्ट करने में लगा हुआ है।

...यही उसे समाप्त करने का सही अवसर है।

हिमराज के हाथ से निकली सर्द किरणों से बचे कई घातक हथियार धनुषा की मौत बनाने उसकी तरफ बढ़े-

लेकिन उस तक पहुंच नहीं पाये-

अब तेरी कोई भी शैतानी नहीं चलने वाली शैतान!

वेणु के फरसे से निकली किरणों का शिकार बने थे हिमराज के हथियार---

और तिल्ली के मांत्रिक हथियारों का शिकार बने उसके हाथ--

आहह

इधर हिमराज वहीं से तड़पता नीचे गिरा--

...और इधर गिरा उसका गुरू तुषारा-चार्ज लगा बजकर--

सच्चे सच्चे है

भड़ाक

मचलता हुआ हिमराज की तरफ पलटा धनुषा--

अब इस दुष्ट की बारी है।

ठहरो मित्र अगर तुमने इसे मार दिया तो हमारे सीने में सुलगती रहेगी वह आग...

...जो इस शैतान को मारने के बाद ही ठण्डी होगी।

शैतान के वार के पश्चात ही--

सम्भलते हुए हिमराज पर एक साथ सभी ने अपने-अपने वार किये--

From Ekam's Comic Vault

दूसरे ही क्षण--

भड़ाक

ओईssss

गूंजी थी हिमराज की अन्तिम चीख...

...जिसे सुनकर अपार संतोष नजर आने लगा था सभी के चेहरे पर-

सभा की समाप्ति के बाद जैसे ही सूर्य के रथ प्रकट हुए उन की आकृतियों के चेहरे पर थी--
सप्तर्षि राजी-बाजी! महाराजी रसिका!
मैं समझ गया आप ही की शक्ति है महर्षि, जिन्होंने मुझे धनुषा के लक्ष्यभेदी बाण के साथ-साथ हम सबको साक्षात मृत्यु से बचाया।
सही समझे पुत्र! उसके बाद हमने अपनी शक्ति से धनुषा के बारेमें जानकारी प्राप्त करके...
...उसकी मृत बहन और भांजे का पता लगाया और धनुषा को उन तक पहुंचाया।
हमने अपने तरीके से तुरीन के हत्यारे से बदला ले लिया और बचा ली उसकी...
...आखिरी निशानी।
तुरीन के बालक की तरफ पलटते ही एक बार फिर आंसुओं से भरती चली गई थीं सभी की आंखें।
समाप्त

बेहोश और घायल भोकाल आज जिसे ममता की छांव की और एक आंचल की जरूरत है...

...उसे मिली वो...

चुड़ैल माँ

...जिसका आंचल आज कफन बनेगा, और ममता की छांव बनेगी मौत की धूप।

राज कॉमिक्स में भोकाल सीरीज का सनसनीखेज कॉमिक

मानवता की रक्षा के लिए
उड़ान भरने वाले परमाणु के
जीवन की यह है...

1997

आखिरी उड़ान

संजय गुप्ता की पेशकश

राज कॉमिक्स में परमाणु सीरीज का सनसनीखेज कॉमिक

Printed at : Skylark Offset Pvt. Ltd. Okhla Phase -II ☎ 6843807

इस हत्यारे ने अभी-अभी एक आभूषणों की दुकान लूटी है और मालिक को मार डाला है, नागराज !

इसने अपराध राजनगर में किया है, और इस पर हक भी राजगनर पुलिस का ही है।

यह महानगर में एक हत्या करके भागा है, ध्रुव !

मैं इसका पीछा करते-करते इसलिए यहां तक आया हूं ताकी इसे महानगर वापस ले जा सकूं। लेकिन मुझे लगता है कि तुम मुझे ऐसा नहीं करने दोगे ! अब तो हमारे-तुम्हारे बीच टकराव होकर ही रहेगा।

मूल्य 25/-

टकराव हुआ ! पूरी दुनिया कांप उठी और ऐसा लगा जैसे आ गई हो...

प्रलय

(नागराज और ध्रुव का टू इन वन विशेषांक)

क्या हुआ जब टकराए कानून के दो
उठे एक-दूसरे के खून के प्यासे ! एक
लेकर आने वाला है कयामत ! इंतजार

15 मई को सर्वत्र उपलब्ध

सतयुग में जिसे छल से जीता गया वो था मेरा वंशज

रावण

1997

RAJ TIGER SERIES

छल और कपट का महाज्ञाता हूं मैं।

नहीं जीत सकता।

मैं हूं...

संज

महारावण

राज कॉमिक्स में भोकाल सीरीज का रहस्यमय कॉमिक विशेषांक